जंगल में बहती नदी की तरह
सुन्दर लगती
परती में लहराती पगडंडी
जिसके पार है
सड़क, बाज़ार और मंडी!

बेल

बेल जा चढ़ी है
अंतिम मुँडेर पर
वहीं घनी होती
नीचे उतर रही है

एक अदा यह उसकी
दूसरी विशेषता यह कि
कानन-कुण्डल जैसे पुष्पों से
सतत भर रही है

तीसरी बात यह कि
भँवरों और तितलियों को
आकर्षित कर रही है
जो उसके पहले
नहीं दीखे

चौथा राज़ यह कि
वह अपने झरते फूलों से
कृतज्ञता ज्ञापित कर रही है
उस माटी के प्रति
जो उसे ले गई है
अंतिम मुँडेर तक

सूर्यप्रताप सिंह चौहान

शिक्षा- स्नातकोत्तर (टेक्सटाइल इंजीनियरिंग)
व्यवसाय- टेक्सटाइल इंजीनियर
सम्पर्क सूत्र- 8979617620
स्थायी पता- फ़र्रुखाबाद (उत्तर-प्रदेश)
ईमेल- surya15894@gmail.com

हैं बरसते पुष्प देखो, आज तो आकाश में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।

पुण्य ही आकर फले हैं, जो तुम्हारा प्रेम बरसा।
सच प्रतीक्षा में तुम्हारी, मन हमारा खूब तरसा ।।

विश्व की खुशियाँ मिली हैं, सब हमें आभास में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।

शांत जीवन में हमारे, बांसुरी सी बाज उट्ठी।
तान कैसी छेड़ दी है, उँगलियाँ खुद साज उट्ठी ।।

मौसमों से लग रहा हम, आ गए मधुमास में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।

घुँघरुओं की छनछनों में, पैर थिरके किस तरह से।
अप्सराएँ नाचती ज्यूँ, स्वर्ग मे हैं, जिस तरह से ।।

बज रहा संगीत देखो, हर तरफ आवास में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।